# यथार्थवाद व उसका शैक्षिक दर्शन

**डॉ. प्रवीन शर्मा**
**प्रिंसीपल**
**शहीद भगत सिंह कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कालांवाली,**
**सिरसा**

यथार्थवाद कोई नई विचारधारा नहीं है सृष्टि के आरम्भ से ही मानव अपने चारों ओर की वस्तुओं को देखकर उनमें विश्वास करता रहा है और यही यथार्थवादी विचारधारा की मूल पृष्टभूमि है। प्रो. डी.एम. दत्त के अनुसार- ''यथार्थवादी दृष्टिकोण किसी भी प्रकार दर्शन में एक नवीन विचारधारा नहीं है। यथार्थवादियों के अनुसार यथार्थवाद मानव का मूल प्रवत्यात्मक विश्वास है और इसलिए यह इतना ही पुराना है जितना मानव।'' यथार्थवादी विचारधारा का उदय 16वीं शताब्दी के अंत में हुआ। यथार्थवादी दर्शन के उदय के दो कारण मुख्य थे प्रथम कारण यह था कि उस समय की आदर्शवादी विचारधारा मानव के लिए महत्वहीन हो चुकी थी। आधुनिक और निरन्तर परिवर्तित आदर्शवादी विचारधारा के आदर्शों को अपनाकर व अपने चरित्र को सुधार कर देखता तो बन सकता था पर अपनी सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता था। आदर्शवादी आदर्श से मनुष्य का मानसिक विकास तो हो सकता था पर क्रियाशीलता एवं व्यावहारिकता की प्राप्ति नही हो सकती है। आदर्शवादी विचारधारा में जगत की अस्थाई, असत्य, अवास्तविक, नश्वर तथा विचार जगत की छाया मात्र मान कर एक शाश्वत सत्य को निर्धारित कर दिया आदर्शवादी विचारधारा में व्यक्ति की मान्यता गौण हो गई अर्थात् वह नामात्र का रह गया। वास्तविक जीवन में सुख व शान्ति लोक में असमर्थ होने के कारण समय की मांग को पूरा न करने और अतिश्य

आदर्शवादी मान्यताओं के विरोध में आदर्शवाद एक अन्दोलन के रूप मे उभरा। दूसरा कारण विज्ञान का विकास था। नवीन खोजों एवं अविष्कारों में मनुष्य के मस्तिष्क में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। अनुसंधानों के फलस्वरूप अन्धविश्वासों एवं दृष्टिकोण की संकीर्णता समाप्त हो गई। 'बुद्धि और विवेक' ने मनुष्य का ध्यान वास्तविकता तथा यथार्थता की ओर आकृषित किया। अत: भौतिक दर्शन तथा वैज्ञानिक प्रणाली ने यथार्थवाद को जन्म दिया। भारतीय दर्शन में भी यथार्थवादी विचार धारा के दर्शन होते ही वेदों में प्रकृति के तत्वों का वर्णन मिलता है। इन तत्वों को यथार्थ माना गया है और इन्हें देवरूप स्वीकार किया गया है। भारतीय जीवन में शरीर को धर्म का साधन माना गया है और साधन वही हो सकता है जिसमें यथार्थता हो, जिसका अस्तित्व हो। तत्व मीमांसा का द्वितत्ववाद चार्वाकवाद, भोगवाद आदि सम्प्रदाय की यथार्थवाद माने जा सकते है। द्वितत्ववाद के अनुसार संसार के पदार्थ भौतिक और मानसिक पदार्थो में बंटे हुए है और भौतिकवाद यथार्थवाद का समकक्षी ही है। चार्वाकवाद के अनुसार संसार वास्तिक है क्योंकि यह प्रत्यक्ष है।

## यथार्थवाद अर्थ

शब्द अर्थ के अनुसार यथार्थवाद अंग्रेजी भाषा के शब्द Realisum का हिन्दी रूपान्तरण है। Real शब्द की उत्पति ग्रीक भाषा के Red शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ वस्तु है अत: Realisum का अर्थ वस्तु सम्बन्धी विचारधारा से है। एक अन्य दृष्टि से यथार्थवाद वस्तु के अस्तित्व संबंधी विचारों के प्रति एक दृष्टिकोण है जो प्रत्यक्ष जगत को सत्य मानता है। यथार्थवाद के अनुसार जगत की वस्तुएं आवश्यक रूप से वैसी ही है जैसी कि वह दिखाई जाती है। हमारे ज्ञान में वह ठीक वैसी ही रहती है

जैसी कि वह चेतना में आने से पहले होती है हमारे अनुभव करने का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यथार्थवादी मान्यता के अनुसार वस्तु का स्वतन्त्र अस्तित्व है। यह वस्तु अनुभव में हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती वस्तु का अस्तित्व ज्ञान पर निर्भर नहीं दोनों की सत्ता स्वतन्त्र है क्योंकि जगत में अनेक ऐसी वस्तुएं है जिनके बारे में हमें जानकारी नहीं है परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि ऐसी वस्तुओं का अस्तित्व नहीं है। प्रसिद्ध विचारक बटलर की दृष्टि से ''यथार्थवाद संसार को सामान्यत उसी रूप में स्वीकार करता है जिस रूप में वह हमें दिखाई देता है।'' यथार्थवाद का अर्थ स्वामी रामतीर्थ के अनुसार ''यथार्थवाद उस विश्वास और सिद्धान्त को कहा गया है जो जगत को वैसा ही स्वीकार करता है जैसा दिखाई देता है।'' रॉस का भी कथन है– ''यथार्थवाद का बल इस बात में निहित है कि हम जो कुछ भी अनुभव करते हैं उनके पीछे ओर उसी से मिलता जुलता वस्तुओं का एक संसार है।''

यथार्थवादी विचारधारा, सिद्धान्तों अथवा शब्दों की अपेक्षा वस्तुओं या पदार्थो को अधिक महत्व देती है। यह विचारधारा जगत को उसी रूप में स्वीकार करती है जिस रूप में वह दिखाई देता है। यथार्थवादी 'जो वास्तव में अस्तित्व है।' उसका अध्ययन करता है। उसके अनुसार अनुभवों के गुण यथार्थ में स्वतन्त्र व संसार के तथ्य है। वह बाहय जगत को काल्पनिक नहीं मानता। वह वास्तविकता व्यावहारिकता, क्रिया, यथार्थ तथा लौकिक जीवन को महत्वपूर्ण मानता है उसकी मान्यता है कि केवल ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान ही सत्य है।

**विशेषताएं/प्रमुख तत्व**

1. यह पदार्थो से बना है पदार्थ और जगत वास्तविक है।
2. ज्ञानेन्द्रियों से परे आध्यात्मिक और मानसिक जगत की संकल्पना भ्रम है।

3. व्यक्तिमन तथा ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से सांसारिक पदार्थो का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. मनुष्य एक पदार्थ ही है।
5. ज्ञान प्राप्ति की वैज्ञानिक विधि सर्वोत्म है विज्ञान के माध्यम से ही हम किसी वस्तु और क्रिया के बारे में व्यवस्थित और क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त करते है।
6. अवलोकन और प्रयोग आधारित अनुभव ही उत्तम है।
7. जो कुछ प्रत्यक्ष है वही सत्य है।
8. विचार तथा वस्तु एक दूसरे से स्वतन्त्र है।
9. वस्तु का अस्तित्व स्वतन्त्र रूप से होता है। ज्ञान तथा अनुभव इसे जानने में मात्र सहायता करते है।

**सामाजिक यथार्थवाद**

सामाजिक यथार्थवाद के अनुसार सैद्धान्तिक शिक्षा की अपेक्षा जीवनोपयोगी तथा व्यावहारिक शिक्षा दी जानी चाहिए। जीवनोपयोगी व व्यावहारिक शिक्षा द्वारा ही किसी भी व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ती की जा सकती है और जब तक मनुष्य की सामाजिक आवश्यकताएं पूरी नही हो जाती तब तक वह सुखी नहीं हो सकता है। सैद्धान्तिक शिक्षा में व्यवहारिकता का कोई ज्ञान नही होता जिसमें वह सामाजिक व्यवहारों में कुशलता प्राप्त नही कर पाता है अत: शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को ज्ञान कोष बनाना नहीं वरन व्यवहार कुशल बनाना है मोटेन के विचारानुसार शिक्षा का लक्ष्य जिससे प्लेटो अथवा अरस्तु की बातों को तोते की तरह रट लेना नहीं है बल्कि ज्ञान तथा विवेक में अभिवृद्धि करना है। बिना समझे किसी बात का मान लेना ठीक नहीं है पुस्तकों के कई असमान्य रूचि उत्पन्न करना अनुचित है। डा. राम शकल पाण्डे ने मोंटेन के विचारों पर पिचार करते हुए लिखा है कि कोरा ज्ञान जीवन में

अव्यवहारिक होता है संसार का व्यावहारिक ज्ञान ही शिक्षा का लक्ष्य हो सकता है। बालक को मन तथा शरीर में बांटना ठीक नहीं है। पाठ याद करना इतना आवश्यक नहीं जितना कि इसे व्यवहार में उतारना। सामाजिक यथार्थवादियों के अनुसार विद्यालय शिक्षा प्रदान करने का उचित स्थान नहीं है क्योंकि विद्यालय में तो बालक को पुस्तकीय शिक्षा ही थोपी जाती हैं। बालक को व्यवहारिक वास्तविक व उपयोगी शिक्षा तो यात्रा भ्रमण, निरिक्षण अनुीाव आदि से ही प्राप्त होती है। इस प्रकार सामाजिक यथार्थवाद ऐसी शिक्षा का समर्थन करता है जो मनुष्य को दूसरी वस्तुओं के सम्बन्ध से प्राप्त होती है। यह सामाजिक जीवन में भाग लेने का समर्थन करता हैं तथा इसके पुस्तकीय ज्ञान को सामाजिक सम्बन्धों के अधीन कर दिया है। रॉस लार्ड मान्टेन जॉन लॉक मन्टेन इसके प्रमुख समर्थक है।

**ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद**

17वीं शताब्दी में ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद का उदय हुआ इनके अनुसार समस्त प्रकार के ज्ञान का साधन हमारी ज्ञानेन्द्रियां है इसलिए बालकों को इन्द्रियों द्वारा वस्तुओं का ज्ञान कराया जाना चाहिए उसे ज्ञानेन्द्रियों ाक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। ज्ञानेन्द्रिय यथार्थबादियों के अनुसार ज्ञान की प्राप्ति प्रकृति निरीक्षण और इन्द्रिय सम्पर्क से होती है। अत: हमारी शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे बालक को प्रकृति के सम्पर्क में आने का अवसर मिले और वह प्राकृतिक पदार्थो तथा नियमों का ज्ञान प्राप्त कर सके। ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद ने पाठ्यक्रम में भाषा और साहित्य के स्थान पर प्रकृति निरिक्षण और विज्ञान की शिक्षा पर बल दिया। उनके अनुसार शिक्षण विधि वैज्ञानिक और आगमन पद्धति प्रधान होनी चाहिए जिसमें निरीक्षण, विश्लेषण तथा संश्लेषण का आधार लिया जाए। शरीर शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। संसार की चर-अचर प्रत्ये वस्तु

का एक अंग है समस्त अवयवों में सम्मिलित रूप से तरंगित प्रक्रिया हो रही है जिसके परिणाम स्वरूप परिवर्तन दृष्टिगत होते है। इस परिवर्तनशीलता के कारण जगत के समस्त तत्वों, विचारों एवं नियमों में अनवरत परिवर्तन होते रहते है:-

- वस्तु जगत में नियमितता।
- मानव का वर्तमान व व्यवहारिक जीवन ही महत्वपूर्ण है।

**यथार्थवाद व शिक्षा**

शिक्षा में यथार्थवाद तात्कालिन शिक्षा में फैली संकीर्णता, लक्ष्यहीन पाठ्यक्रम व अस्पष्ट विधियों के विरूद्ध हुआ। रॉस ने भी लिखा है ''जिस प्रकार प्रकृतिवाद शिक्षा के क्षेत्र में बनावटी प्रशिक्षण पद्धतियों के विरोध स्वरूप हुआ, उसी प्रकार यथार्थवाद उस पाठ्यक्रम के विरोध में आया है जो पुस्तकीय, अवास्तविक एवं जटिल हो गया है।'' यथार्थवाद में शैक्षिक क्षेत्र में अवास्तविक एंव पुस्तकीय पाठ्यक्रम का विरोध कर बाल केन्दिय्र मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक उपयोगी शिक्षा का समर्थन किया। यथार्थवादियों ने शिक्षा में अनेक विषयों को शामिल कर पाठ्यक्रम को विस्तृत किया व उसे वास्तविक जीवन से भी सम्बन्धित किया। यथार्थवादी शिक्षा में विषयों की अपेक्षा प्राकृति तत्वों एवं सामाजिक संस्थाओं को महत्व दिया। ज्ञान प्राप्ति के लिए यथार्थवाद में इन्द्रियों पर बल देकर शिक्षा में सहायक सामग्री तथा दृश्यश्रव्य साधनों के प्रयोग एवं महत्व को बढाया। यथार्थवादियो में शिक्षा के साथ-साथ व्यवसायिक शिक्षा पर भी बल दयिा। व्यवसायिक शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हएु डिवेनपोर्ड ने कहा है कि ''कोई भी व्यक्ति किसी व्यवसाय को बिना शिक्षा का चयन न रके और बिना शिक्षा के व्यवसाय का चयन करे।'' यथार्थवादियों के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो जीवन की दैनिक व सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके। उनके अनुसार वह शिक्षा व्यर्थ है जिससे

प्राप्त करके जीवन की समस्याओं को न सुलझाया जा सके इसलिए वे शिक्षा का वास्तविक जीवन से समन्वय स्थापित करना चाहते है। यथार्थवाद ने साहित्यिक और कलात्मक शिक्षा के स्थान पर यथार्थवाद के चार रूप माने जाते है ये रूप निम्नलिखित है:-

1. मानवतावादी यथार्थवाद
2. सामाजिक यथार्थवाद
3. ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद
4. वैज्ञानिक यथार्थवाद/ नव यथार्थवाद

मानवतावादी यथार्थवादियों का कहना है कि शिक्षा यथार्थवादी होनी चाहिए जिससे मानव जीवन सुखमय एवं समद्ध बन सके। जीवन को सफल एवं समद्ध बनाने के लिए मानववादी है। प्राचीन रोमन एवं यूनानी साहित्य के अध्ययन पर बल देते है उनके अनुसार साहित्य जीवन का दर्पण है और मनुष्य के व्यवहारिक जीवन में उसका पथ प्रदर्शन करता है और संसार में सफल जीवन बिताने में सहायता प्रदान करता है। और संस्थाओं को समझने की क्षमता पैदा कर सके। इससे उसे समाज में समजस्य बना रखने में सहायता प्राप्त होती और वह अपने उत्तरदायित्वों को सही ढंग से निर्वाह कर सकेगा तथा जीवन में सफलता प्राप्त कर सकेगा। यथार्थवादियों के अनुसार शिक्षा का एक उद्देश्य व्यक्ति के व्यवसायिक उन्नति के रास्ते पर ले जाना है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति में ऐसी क्षमता उत्पन्न करे जिससे व्यक्ति वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करके अपने जीवन का यापन कर सके। यथार्थवादी जहां व्यावसायिक शिक्षा देना है वहां सांस्कृतिक को छोड़ना नहीं है। अथार्थ यथार्थवाद व्यवसायिक शिक्षा व सांस्कृतिक शिक्षा का समन्वय भी करता है। व्यवसायिक व सांस्कृतिक शिक्षा का

समन्वय करते हुए रॉस ने लिखा है कि ''हमारा निष्कर्ष यह है कि जहां तक सम्भव हो वहां तक शिक्षा के सांस्कृतिक और व्यावसायिक पहलूओं को मिलाकर एक घर देना चाहिए। जहां ऐसा करना असम्भव है वहां हम जितना व्यावहायिक प्रशिक्षण आवश्यक है उतने के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रशिक्षण भी देना चाहते है क्योंकि यदि संस्कृति व्यवसाय के लिए आवश्यक है तो व्यवसाय भी इसके लिए आवश्यक है। संक्षेप में हमें यत्न करना चाहिए कि किसी व्यवसाय में कोई एक चीज चुनने के लिए मजबूर न होना पड़े। जो स्कूल विशिष्ट व्यवसायों की शिक्षा देते हैं उन्हें सांस्कृतिक शिक्षा की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और जो स्कूल संस्कृति को अपना मुख्य कार्य समझते है। उन्हें व्यवसाय सम्बन्धी विचारों को नजर-अन्दाज नहीं करना चाहिए। इस प्रकार यथार्थवादी न केवल व्यवसायिक शिक्षा बल्कि व्यावसायिक शिक्षा के साथ सांस्कृतिक शिक्षा को भी अपना मानते है। यथार्थवादी शिक्षा के द्वारा मानव में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को भी शिक्षा का एक उद्देश्य मानते हुए कहते हैं कि प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण का स्पष्ट ज्ञान वैज्ञानिक विधियों के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए यथार्थवादी विवेक ज्ञान को आवश्यक मानते है। विवेक के बिना वास्तविक ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता ज्ञान के तीन स्तर होते है:-

1. इन्द्रिय ज्ञान
2. तर्क बुद्धि परक ज्ञान
3. कल्पना ज्ञान।

**यथार्थवादियों के अनुसार**

बालक में तर्क बुद्धिपरक ज्ञान का ऐसा विकास किया जाना चाहिए जिससे इन्द्रियज्ञान से तथ्यों को विश्लेषित किया जा सके एवं तर्क बुद्धि द्वारा वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो सके। यथार्थवादी वस्तु जगत को ही वास्तविक मानते है और यह मानते हैं कि जब तक बालक की ज्ञानेन्द्रियों का विकास पूर्ण रूप से नहीं होगा तब तक उनको वस्तुओं का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो सकता अत: शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानेन्द्रियों का विकास और उचित प्रशिक्षण होना चाहिए।

शिक्षा का माध्यम प्राचीन भाषाओं के स्थान पर मातृभाषा या बोल चाल की भाषा रखने को कहा गया। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और सामाजिक आधारों को लेकर ज्ञानेन्द्रिय यथार्थवाद विकसित हुआ।

**वैज्ञानिक यथार्थवाद**

यथार्थवाद की इस शाखा के अर्न्तगत कला के साथ-साथ विज्ञान पर भी बल दिया गया। वैज्ञानिक यथार्थवाद के अनुसार जो कुछ भी वस्तुरूप में सत्य है वह तभी सत्य है जब वह विज्ञान के सिद्धान्त पर सत्य सिद्ध हो जाए। इसके लिए प्रयोग, आगमन एवं निगमन आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाना चाहिए तथा शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक विषयों को अधिक मान्यता देनी चाहिए इसके अतिरिक्त शिक्षा का ध्येय जीवन को पूर्णता व वैज्ञानिक प्रदान करना है। यथार्थवाद शिक्षा को ही मानव के सर्वांगीण विकास का साधन मानते है। ऐसी संस्था के रूप में स्वीकार करता है जिससे व्यक्ति का निर्माण होता है। यथार्थवादी ऐसी शिक्षा में विश्वास करते है जो वर्तमान संसार से संबंधित है। यथार्थवादी शिक्षा में प्राकृतिक तत्वों और सामाजिक संस्थाओं को भी अधिक महत्व दिया गया है। मुनरो के शब्दों में शिक्षा में यथार्थवाद शब्द इस

प्रकार की शिक्षा के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिसमें प्राकृतिक तत्वों तथा सामाजिक संस्थाओं को भाषाओं और साहित्य की अपेक्षा अध्ययन का मुख्य विषय माना जाता है। शिक्षा का वर्तमान जीवन से सम्बन्ध के विषय में रॉस में लिखा है ''यथार्थवाद में शिक्षकों से बार-बार यह कहा जाता है कि वे कल्पनाओं ओर वादों को छोड़कर वास्तविकताओं पर ध्यान दें।'' शिक्षा के विभिन्न तत्वों पर यथार्थवाद के प्रभाव का विस्तर से विचार किया गया है शिक्षा के उद्देश्य का सम्बन्ध मूल्यों से होता है जैसे जीवन के मूल्य होंगे वैसे ही शैक्षिक मूल्य होंगे और जैसे ही शैक्षिक मूल्य होंगे वैसे ही शैक्षिक उद्देश्य होंगे। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मूल्यों के बारे में यथार्थवादी व्यक्तिनिष्ठता के स्थान पर वस्तु निष्ठता को स्थान देते है। इस दृष्टि से यथार्थवादी शिक्षा के उद्देश्य वस्तुनिष्ठता से पूर्ण होंगे।

यथार्थवाद के अनुसार शिक्षा का एक उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास कर उसे पूर्ण मानव बनना है। रॉ बीलीयास के विचारानुसार शिक्षा का उद्देश्य ऐसे पूर्ण मनुष्य का निर्माण करना है जो कला ओर उद्योग में कुशल हो। शारीरिक सामाजिक, बौद्धिक एवं नैतिक रूप से पूर्ण मनुष्य का निर्माण करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। इसके लिए आवश्यक है कि दी शिक्षा को वास्तविक जीवन से संबंधित किया जाए। शिक्षा का एक उद्देश्य बालक को प्रकृति तथा सामाजिक पर्यावरण का पूर्णज्ञान प्रदान कर दे जिससे वह मानव प्रकृति, प्रेरणाओं, इच्छाओं, आवश्यक्ताओं से प्रेरित हो सके।

## यथार्थवाद और अनुशासन

यथार्थवादी शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी की रूचियों को महत्व देता है परन्तु अनुशासन का भी कढाई से पालन करने की आवश्यकता मानता है यथार्थवादी बालकों में अनुशासन का होना आवश्यक मानते हैं लेकिन वह दमनात्मक अनुशासन के पक्ष में

नहीं है वे बालकों में ऐसा अनुशासन पैदा करना चाहते है जो अन्तः प्रेरित है और प्रेम और सहानुभूति पर आधारित हो। यथार्थवाद के अनुसार अपने चारों और की परिस्थितियों को समक्ष कर सामजस्य बनाना ही अनुशासन है। बालकों को अपनी भावनाओं तथा इच्छाओं पर नियंत्रण रखने की शिक्षा प्रदान करना ही वास्तविक अनुशासन है। इस प्रकार विद्यालय जीवन में भावनाओं तथा इच्छाओं पर विजय प्राप्त करने का ऐसा प्रशिक्षण जिससे विद्यार्थी व्यवस्था के साथ अनुकूलन स्थापित कर सके अपेक्षित दिशा में विद्यार्थी का व्यवहार प्रवृत हो सके अनुशासन का प्रशिक्षण कहलाता है। ऐसा बालक जो अभावों से नही घबराता अपने भौतिक वातावरण के साथ सुक्षमतापूर्वक समायोजन कर लेता है। कठिनाईयों से दूर नही भागता वह अनुशासित है।

**यथार्थवाद और शिक्षा**

यथार्थवादी अध्यापक के महत्व को स्वीकार करता है यह उसे सर्वोच्च स्थान नहीं देता है। यथार्थवादियों के अनुसार शिक्षक द्वारा बालक को वैज्ञानिक तथ्यों को स्पष्ट, सरल और सुव्यवस्थित जानकारी वस्तुनिष्ठ विधियों द्वारा दी जानी चाहिए। शिक्षक को अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं को बालकों को नहीं देना चाहिए। यथार्थवादियों के अनुसार शिक्षक को यथार्थवादी बालक की आवश्यकताओं की पूर्णजानकारी होनी चाहिए उसे इस बात का भी पूर्ण ज्ञान होना चाहिए कि किस बालक को कितना ज्ञान दिया जाना चाहिए। शिक्षक समस्त बालकों को एक ही विधि के द्वारा सारा ज्ञान नहीं दे सकता इसलिए उनकी पाठ्य सामग्री को इस प्रकार सरल व स्पष्ट रूप से प्रकट करने की क्षमता होनी चाहिए कि बालक उसमें रूचि ले सके और उससे पूरा लाभ उठा सके। यथार्थवादियों के अनुसार शिक्षक द्वारा कथ्यों को निरीक्षण तथा प्रयोगात्मक के अवसर दिए जाने चाहिए।

## यथार्थवाद व बालक

यथार्थवादी बालक केन्द्रित शिक्षा की व्यवस्था है। बाकल एक ऐसी ईकाई है जिसका वास्तविक अस्तित्व है इसलिए सम्पूर्ण शिक्षा इस प्रकार व्यवस्थित होनी चाहिए कि वह बालक के व्यक्तित्व में सहायक हो। यथार्थवाद के अनुसार बालकों में कुछ ईच्छाएं, भावनाएं, प्रवृतियां, शक्तियां होती है जिनकी अवहेलना नहीं की जा सकती। परन्तु इसका आश्रय यह नहीं है कि उसे स्वतंत्र छोड दिया जाए। माता-पिता का मार्गदर्शन प्राप्त होना चाहिए क्योंकि स्वतन्त्र छोड देने पर वह भ्रमित हो सकता है। वरन बालक को इस प्रकार का शिक्षण दिया जाए कि वह ज्ञान प्राप्त करे और उसे यथार्थ समझे।

यथार्थवाद के अनुसार शिक्षा का एक उद्देश्य उसकी जन्मजात शक्तियों का विकास करना भी है। प्रमुख विचारक जे.ए. कमेनिमस की दृष्टि में शिक्षा बालक में जन्मजात रूप से प्रदत्त अविकसित शक्तियों के विकास का कार्य करती है। शिक्षा का अर्थ निर्माण है तथा विद्यालय मनुष्यों को ढालने का सही स्थान है।

## पाठ्यक्रम

यथार्थवादी पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों को सम्मिलित करने की सलाह देते है जो बालक के लिए उपयोगी हो। यथार्थवादी ज्ञान के लिए ज्ञान के सिद्धान्त के विरोधी है। पाठ्यक्रम में ऐसे विषय हो जिनका व्यावहारिक जीवन में उपयोग हो। पाठ्यक्रम में अनेक विषयों को शामिल किया जाना चाहिए तथा विषयों को चुनने का अधिकार बालकों को होना चाहिए भाषा में आधुनिक भाषाओं को स्थ्ज्ञान देना चाहिए क्योंकि इनके माध्यम से स्वस्थ सामाजिक अन्तक्रिया होती है। स्वान्तः सुखाय हेतु साहित्य, कला, संगीत, नृत्य को स्थान नहीं मिलना चाहिए। यदि समाज शास्त्र से सामाजिक विकर्षण की सम्भावना है तो

इसे भी बाहर रखा जाना चाहिए। यथार्थवादी पाठ्यक्रम में बालक के पूर्व अनुभव और शिक्षण पर भी ध्यान दिया गया है। इसके अनुसार पाठ्यक्रम में ऐसे विषय हो जिनसे सर्वोत्म शैक्षिक परिणाम हो। यथार्थवाद आवश्यकता के सिद्धान्त को मानते हुए ऐसे विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल करना है। जिनकी आवश्यकता हो तथा इन विषयों में सहसम्बन्ध को भी आवश्यक मानता है। यथार्थवादी वैज्ञानिक विषयों को जीवन में अत्यधिक उपयोगी मानते हुए पाठ्यक्रम में गणित, रसायन शास्त्र, भौतिकी, जीवविज्ञान, भूगोल, विज्ञान को सम्मिलित करने पर बल देता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि यथार्थवाद पाठ्यक्रम में विज्ञान और तकनीकी विषयों को प्रधानता तथा साहित्य कला, नृत्य आदि को गौण स्थान देता है।

**शिक्षण विधियां**

यथार्थवाद ऐसा मानता है कि वस्तु की स्वतन्त्र सला है उसके लिए विचार अथवा ज्ञान का होना अनिवार्य नहीं है। यथार्थवादी वस्तुनिष्ठता की प्रधानता देते है। इसलिए शिक्षण में भी वस्तुनिष्ठ विधियों को प्रमुख स्थान देते है। यथार्थवादियों के अनुसार शिक्षण विधि ऐसा होनी चाहिए जिससे शिक्षक बिना कुछ छटाए बढाये तथ्य को प्रकट करे और वैसे ही तथ्य बालक ग्रहण कर ले इस विधि को तथ्य केन्द्रित शिक्षण विधि कहते है। इस शिक्षण विधि में शाब्दिकता और वैयक्तिकता को दूर रख वस्तुनिष्ठता पर अधिक बल दिया गया है। यथार्थवादी वैज्ञानिक विधि तथा समस्याओं के समाधान पर अधिक बल देता है यथार्थवादी, वैज्ञानिक विधि के निरीक्षण, प्रदर्शन, विश्लेषण एवं आगमन पद्धतियों का प्रयोग करते है। यथार्थवादी इन्द्रियनुभव पर अधिक बल देते है इसी कारण आगमन पद्धति का प्रयोग किया जिसमें बालक के समक्ष प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करके स्वयं बालक से ही परिभाषा और नियम निकलवाये जाते है। यथार्थवादियों

ने संश्लेषणात्मक विधि का समर्थन किया। यथार्थवादी शब्दों से प्रारम्भ करके उनमें समन्वय करता हुआ पूर्ण तक पहुंचता है। यथार्थवादी सहसंबंध विधि पर भी बल देते है भ्रमण और पर्यटन विधि को भी यथार्थवादी शिक्षण विधियों में स्थान दते है तथा अवलोकन प्रयोग तथा अनुभव उपगमों को व रटने के स्थान पर स्वानुभव उपागम को श्रेयस्कर मानते है।

**विद्यालय**

यथार्थवादियों के अनुसार विद्यालय शिक्षा का सर्वोच्च केन्द्र है। विद्यालय का वातावरण इस प्रकार का होना चाहिए कि बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बटलर के शब्दों में ''यथार्थवादी शिक्षा में विद्यालय का मुख्य कार्य शिक्षण, अनुशासन तथा छात्रों की क्रिया के माध्यम से शारीरिक, सामाजिक, मानसिक तथा नैतिक प्रशिक्षण का विकास करना।'' विद्यालय समाज का ही एक लघु रूप है इसलिए विद्यालय में समाज से संबंधी क्रियाओं का आयोजन होना चाहिए और सफल जीवन जीने के लिए विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए विद्यालय में वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि यथार्थवाद शिक्षा को व्यावहारिक बनाने पर बल देता है। कोरी कल्पना या जिसका कोई अस्तित्व नहीं है वह इसका विषय नहीं है। यथार्थवादी शिक्षा क्रूा है उससे सम्बन्धी है यथार्थवादी पाठ्यक्रम में तकनीकी विषयों, जीवनोपयोगी, कौशलों, अनौपचारिक कार्यक्रमों, बहु संबंधी पाठ्यक्रम पर बल देता है ताकि शिक्षा व्यावहारिक जीवन में मानव की सहायता कर सके और वह अपने जीवन में आने वाली समस्याओं का आसानी से मुकाबला कर सके। यथार्थवाद वैज्ञानिक विधियों व तथ्य केन्द्रित विधियों द्वारा शिक्षा देने की सिफारिश करते है जिससे विद्यार्थी को ज्ञान

देते समय शिक्षक अपने विचारों को विद्यार्थी पर न लादे व विद्यार्थियों को भी अपनी इच्छाओं और भावनाओं को व्यक्त करने का मौका मिले। यथार्थवाद में वैयक्तिक शिक्षा पर बल देकर व्यक्ति के महत्व को स्थापित किया जिसके कारण आधुनिक शिक्षा पर यथार्थवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा है। इसके कारण विज्ञान को शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान मिला है। परन्तु यहां यह भी कहा जा सकता है कि यथार्थवादी भौतिक जगत को ही यथार्थ सत्ता मानते है।

यथार्थवादी ज्ञानेन्द्रियों को ही यथार्थज्ञान का स्त्रोत मानते है परन्तु ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति सीमित होती है। हमें ज्ञानेन्द्रियों से भी भ्रम या अस्पष्ट ज्ञान होता है इसलिए ज्ञानेन्द्रियों द्वारा यथार्थज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। यथार्थवाद विज्ञान को आवश्यकता से अधिक महत्व देता है। क्योंकि मनुष्य के जीवन में कला एवं साहित्य, संगीत का अपना विशेष महत्व है। इस प्रकार यथार्थवादी विचारधारा में कुछ कमियां भी है, फिर भी उनके गुणों को देखकर कहा जा सकता है कि यथार्थवाद में शिक्षा को पुरानी रूढ़ियों से मुक्त किया है जिसके कारण आधुनिक शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. लाल, रमन बिहारी एवं तोमर, राजेन्द्र सिँह (2004). विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक : मेरठ, आर.लाल बुक डिपो ।
2. कुमार, राजेन्द्र (2007). आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा : भिवानी लक्ष्मी बुक डिपो ।
3. वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद (2007). विश्व के महान शिक्षा शास्त्री : पटना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी ।
4. प्रभाकर, विष्णु (1950). हे राम हे राम : दिल्ली, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन ।

5. गुप्ता, रेणु (2007). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा : नई दिल्ली, जगदम्बा पब्लिशिंग कम्पनी ।
6. सचदेव एवं शर्मा (2006). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा : लुधियाना विजया पब्लिकेशन ।
7. यादव एवं यादव (2008). आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा : लुधियाना टण्डन पब्लिकेशन ।